संपादकीय

'कंचनजंघा' का प्रवेशांक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसके गुण-दोषों का विवेचन, उपादेयता अथवा निःसारता का निर्णय तो सहृदय पाठक ही करेंगे। सिक्किम में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को देखें तो हमें एकाध हिंदी समाचार-पत्र तो अवश्य मिल जाएंगे, लेकिन साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या फिलहाल शून्य है। इसी घोर निराशा और असंतोष की परिधि पर 'कंचनजंघा' की संकल्पना ने साकार रूप लेना शुरू किया, इसे आप उम्मीद की एक नींव कह सकते हैं। कंचनजंघा से सिक्किम प्रांत का अटूट रिश्ता है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से यहाँ की लोक-संस्कृति पर कंचनजंघा का विशेष प्रभाव है। पृष्ठ प्रेषण से बचते हुए हम आपसे इस अंक में संकलित छुकी लेप्चा का लेख 'सिक्किम की लोक संस्कृति पर कंचनजंघा का प्रभाव' और कंचनजंघा पर केंद्रित श्रीप्रकाश मिश्र की कविताओं का अवलोकन करने हेतु अनुरोध करते हैं।

पूर्वोत्तर भारत की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को वैश्विक पटल पर साझा करना इस उपक्रम का मुख्य उद्देश्य है। हम जानते हैं कि धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला एवं पर्यटन आदि की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत की विशिष्ट पहचान है। इस अंक में विषय एवं विधागत वैविध्यता के साथ अधिकतम सामग्री पूर्वोत्तर भारत पर केंद्रित रखी गई है। आगामी अंकों में भी हमारा प्रयत्न होगा कि सृजनात्मक लेखन पर विशेष जोर देते हुए हम इसे बरकरार रख सकें। दूसरी भाषाओं की अनूदित रचनाओं मसलन कविता, लेख एवं नाटक आदि के हिंदी अनुवाद को भी इस अंक में विशेष महत्त्व दिया गया है।

पत्रिका के संपादन के क्रम में हमने महसूस किया कि वास्तव में पत्रकारिता बहुत ही चुनौतीपूर्ण दायित्व है, इसका निर्वहन निश्चित रूप से समवेत प्रयास से ही संभव है। वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा एवं साहित्य की स्थिति को यह उपक्रम समग्र रूप से रेखांकित करने का प्रयत्न करेगा, ऐसा विश्वास है। पूर्वोत्तर भारत के युवा रचनाकारों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने हेतु 'कंचनजंघा' विशेष रूप से प्रतिबद्ध है। अध्ययन-अध्यापन के माध्यमों में हो रहे अद्यतन बदलाव एवं डिजिटल दुनिया जैसी संकल्पना के विस्तार को दृष्टिगत रखते हुए 'कंचनजंघा' को ई-संस्करण का रूप दिया गया है। इस जर्नल के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से आपको रू-ब-रू करवाने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

निकट भविष्य में हम 'कंचनजंघा' के माध्यम से समाज भाषा विज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध एवं लुप्त हो रही भाषाओं, ऐतिहासिक एवं पौराणिक तथ्यों, लोकगीतों, लोककथाओं, लोकनाट्यों, सुभाषितों आदि को भी अनुवाद के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

पत्रिका की यह कोशिश होगी कि इसके प्रत्येक अंक में उन विधाओं को तरजीह दी जाय, जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं की परिधि से अब तक बाहर हैं। हमारे लिए व्यक्ति या लेखक महत्त्वपूर्ण न होकर 'रचना' की अहमियत सर्वोपरि होगी। इस अंक में 'धरोहर' शीर्षक से एक कॉलम निर्धारित किया गया है। इसके अंतर्गत विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत की संस्कृतिक विरासत, नृत्य, पेंटिंग्स, कलाकृतियों आदि के छाया चित्रों को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाएगा।

पूर्वोत्तर भारत में सक्रिय रंगकर्मियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों एवं भाषा-शिक्षण से संबद्ध अध्यापकों की रचनाशीलता का कंचनजंघा हिंदी ई-जर्नल में स्वागत है। निकट भविष्य में इनकी गतिविधियों एवं साक्षात्कार को इस जर्नल में प्रमुखता से प्रकाशित करने की योजना है। पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं के साथ सामंजस्य एवं उनके प्रति सम्मान भाव रखते हुए 'कंचनजंघा' का उद्देश्य हिंदी भाषा से अधिकाधिक लोगों को जोड़ने एवं उनके अंदर भाषा के प्रति रुचि पैदा करना रहेगा।

फणीश्वरनाथ रेणु एवं महात्मा गांधी को इस अंक में विशेष रूप से स्मरण किया गया है, इस पर केंद्रित शिवमूर्ति एवं राजीव रंजन गिरि का लेख उल्लेखनीय है। इस अंक में संकलित गोपाल प्रधान का लेख 'रंगभेद, नस्ल एवं अश्वेत समस्या' अत्यंत पठनीय एवं दुर्लभ सामग्री है। इसके अलावा मणिपुरी हिंदी पत्रकारिता, बाल-विमर्श, लोक-साहित्य, किंवदंती, छाया चित्र, कविता, कहानी, उपन्यास अंश एवं पुस्तक समीक्षा जैसी कई महत्त्वपूर्ण सामग्री इस अंक में संकलित है। उम्मीद है, सहृदय पाठक इसे पसंद करेंगे।

विगत माह साहित्य एवं सिनेमा जगत के कई महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर कृष्ण बलदेव वैद, गिरिराज किशोर, श्रवण कुमार गोस्वामी, सुषमा बेदी, शशिभूषण द्विवेदी, नंदकिशोर नवल, इरफ़ान ख़ान एवं ऋषि कपूर आदि हमारे बीच नहीं रहे, उनकी स्मृतियाँ हमारे ज़ेहन में शेष हैं। कंचनजंघा परिवार की ओर से उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

परामर्श एवं संपादक मंडल के समवेत प्रयास से 'कंचनजंघा' का प्रथम अंक हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। उम्मीद है, पूर्वोत्तर भारत में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के खालीपन को भरने में यह उपक्रम एक कड़ी के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

***